SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोविड –19 संगठित एवं असंगठित लोगों में रोजगार पर प्रभाव

आशीष दूबे, वाणिज्य विभाग,
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
आशीष दूबे, वाणिज्य विभाग,
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/09/2020
Revised on : -----
Accepted on : 28/09/2020
Plagiarism : 02% on 23/09/2020

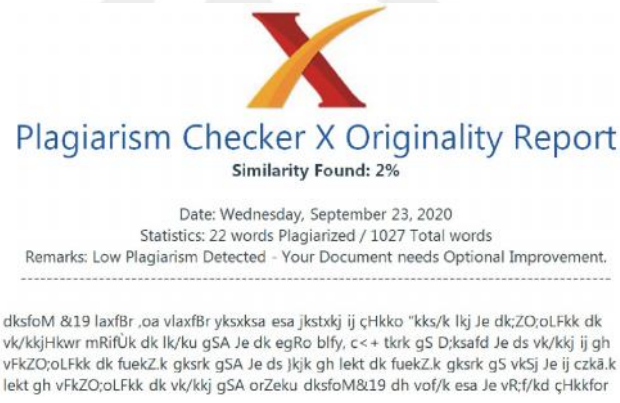

शोध सार

श्रम कार्यव्यवस्था का आधारभूत उत्पत्ति का साधन है। श्रम का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि श्रम के आधार पर ही अर्थव्यवस्था का निर्माण होता है। श्रम के द्वारा ही समाज का निर्माण होता है और श्रम पर आधारित समाज ही अर्थव्यवस्था का आधार है। वर्तमान कोविड–19 की अवधि में श्रम अत्यधिक प्रभावित हुआ है। श्रम उत्पत्ति के संपूर्ण साधनों में सर्वाधिक संवेदनशील है, यही कारण है कि इस आपदा के समय में श्रम पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। संगठित क्षेत्र की तुलना में असंगठित क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव अधिक पड़ा है। कोविड–19 के अवधि में श्रम पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है यह नकारात्मक प्रभाव असंगठित श्रम क्षेत्रों पर अधिक पड़ा है जिसके कारण संपूर्ण अर्थव्यवस्था में श्रम का पलायन विभिन्न उत्पादन क्षेत्रों से हो रहा है, जो अर्थव्यवस्था के लिए घातक है। अध्ययन में इन्ही महत्वपूर्ण दशाओं को प्रदर्शित किया गया है।

मुख्य शब्द

श्रम, संगठित श्रम, असंगठित श्रम, पलायन, कोविड–19।

विषय पर आने से पूर्व मैं प्रबंधनीय विचारधारा के विकास पर अपने कुछ दृष्टांत करना चाहूंगा, 'आधुनिक प्रबंधकीय विचारधारा में विकास आक्समिताओं के प्रबंधन की विचार धारा में आक्समिकताओ के प्रबंधन की विचारध ारा अत्यंत महत्वपूर्ण है और यह मुझे चुनौतीपूर्ण भी लगता है। इस विचारधारा के अनुसार परिचालन गतिविधि यों में निरंतरता बनाए रखने के लिए आकस्मिक घटनाओं का नियंत्रण एवं कार्य गतिविधियों को योजना अनुरूप दिशा दिया जाना ही प्रबंधन है।

श्रम के संबंध में यह विचारधारा सर्वथा उपयुक्त है। श्रम उत्पत्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है जिसे इच्छित कार्य के लिए प्रेरित करना अत्यंत जटिल कार्य

है। श्रम को प्रबंधकीय विचारको ने स्पष्ट किया है कि एक अच्छा संगठन जटिल कार्यों को भी सरल बना देता है और एक कमजोर संगठन सरल कार्यों को भी कठिन बना देता है, यहाँ संगठन का अच्छा या बुरा होना श्रमिकों की कार्य क्षमता एवं योग्यता से कम प्रभावित होता है, अपितु कार्य करने भी इच्छा से अधिक प्रभावित होता है। प्रबंध ान के समक्ष सदा चुनौती रहती है कि, वह श्रमिकों को कार्य करने के लिए किस प्रकार प्रेरित करें, इस विषय पर भी अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं लेकिन यह कभी विचार प्रबंधनीय तकनीकों से कम संबंध रखते हैं और मानवीय मनौविज्ञान से ज्यादा संबंध रखते हैं।

मनोविज्ञान जटिल विषय है मनोविज्ञान स्थितियों का पूर्वानुमान (Hypothitcal) हो सकता है, सत्यता के केवल अनुमान लगाया जा सकता है, वास्तविकता सत्य से पृथक हो सकता है। यहां यह स्पष्ट होता है श्रम पूर्णतः श्रमिक की कार्य करने की इच्छा पर निर्भर करता है जिस का पूर्वानुमान लगा पाना कठिन है। मानवीय मनोदशा किसी भी स्थिति में स्थिर नहीं रहती या किसी भी स्थिति में संतुष्ट नहीं हो सकती। प्रबंधकीय आवश्यकता होती है कि श्रम की परिस्थितियां एवं दशाओं का अध्ययन किया जाए और उनके आधार पर नीतियों का निर्धारण किया जाए, जिससे प्रबंधकीय लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

श्रम को कई भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है कुशल एवं अकुशल श्रम, स्थाई एवं अस्थाई श्रम, दैनिक एवं नियमित श्रम, विशेष योग्यता वाले एवं सामान्य श्रम, पूर्ण एवं अंशकालीन श्रम, सामान्य एवं मौसमी श्रम। प्रत्येक श्रम भी प्रकृति कार्य दशाएं, प्रवृत्ति, विचार, आम सामाजिक दशा अलग–अलग होती है। यदि प्रत्येक श्रमिक को कार्य के संबंध में विचार प्राप्त किए जाए तो इसकी अत्यंत कम संभावना होती है कि उसमें एक रुपता हो। उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि श्रम अत्यन्त संवेदनशील, जटिल, असंतुष्ट, अस्थिर उत्पत्ति का साधन है जिसे नियंत्रित कर इच्छित कार्य के लिए प्रेरित करने की प्रबंधकीय लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

विषय के अंतर्गत संगठित तथा असंगठित श्रम क्षेत्रों को शामिल किया गया है। सबसे पहले बात करेंगे संगठित श्रम क्षेत्रों की, संगठित श्रम क्षेत्रों के अंतर्गत उन श्रमिकों की या श्रम क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जो परिभाषित हैं अर्थात् जो रोजगार, आय, सुरक्षा की स्थिरता है जहाँ श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा संबंधित सुविधाएं उपलब्ध है सामान्यतः जिनका जीवन सरल है। दूसरा क्षेत्र जिससे असंगठित श्रम क्षेत्र कहा गया है, इन्हें हम दिहाड़ी मजदूर की श्रेणी में भी रख सकते हैं इन्हें प्रवासी मजदूर भी कहा जा सकता है, ये मजदूर कुशल एवं अकुशल दोनों हो सकते हैं, लेकिन इन मजदूरों के कुशलता एवं अकुशलता निर्धारण का कोई विशिष्ट आधार या प्रमाण नहीं होता है। असंगठित क्षेत्र के अधिकांश मजदूर एक ही स्थान पर रुक कर काम नहीं करते इन्हें मौसमी मजदूर भी कर सकते हैं, असंगठित क्षेत्र के अधिकांश मजदूर कृषि क्षेत्रों से संबंधित होते हैं तथा उन्हें स्थानों से संबंधित होते हैं, जहां इनकी फसल होती है, कृषि के मौसम में यह श्रमिक अपने घर या कृषि क्षेत्रों में रहकर कार्य करते हैं। ये कृषि के मौसम के समाप्त होने ही बाद में अपने गृह नगर से दूसरे शहर में जाकर मजदूरी करते हैं।

निष्कर्ष

कोविड–19 या करोना का प्रभाव सबसे पहले सितंबर–अक्टूबर 2019 में आया। उस समय कोई भी नहीं सोचा था कि, यह वैश्विक महामारी का रूप ले लेगा। हमारे देश में भी आरंभिक स्थितियों में जब लॉकडाउन किया गया उस समय पर अनुमान लगाया गया कि स्थितियां जल्द ही नियंत्रित हो जाएगी। आवश्यकताएँ एवं चुनौतियां लगातार आती गई जो पूर्वानुमानो के विपरित रही। उद्योगों के बंद होने के प्रभाव संगठित एवं असंगठित दोनों ही क्षेत्रों पर पड़ा, किन्तु यह प्रभाव असंगठित क्षेत्र के मजदूरों पर अधिक पड़ा। उद्योगों एवं काम धंधे के बंद होने के बाद इन मजदूरों को काम मिलना बंद हो गया, जिसके प्रभाव से उनके आय, अर्जन का उद्देश्य पूर्ण होना बंद हो गया एवं बितते समय के साथ उनकी बेचैनी और बढ़ने लगी क्योंकि मानसून आने के पूर्व उन्हें अपने ग्रह ग्राम पहुंचना आवश्यक था, ताकि वे अपने गृह कृषि कार्यों में संलग्न हो सके। जनसंख्या भी अधिक श्रम उपलब्धता के लिए वरदान है तो इस श्रम का उपयोग चुनौती से कम नहीं है। असंगठित क्षेत्रों के मजदूरों में गृह ग्राम लौटने की प्रवृत्ति अधिक है, जिसका कारण कृषि कार्यो के प्रारंभ होने का कारण है। पूर्व में ही मैंने यह स्पष्ट किया है कि श्रम

को संतुष्ट रख पाना संभव नहीं है फिर भी ऐसा लगता है कि यदि इस प्रकार के असंगठित श्रमिकों को यदि उनके गृह ग्राम के समीप ही या गांव में ही रोजगार उपलब्ध किया जा सके तो भविष्य में इस प्रकार की कठिनाईयों की पुनरावृत्ति को रोका जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. *दैनिक नवभारत समाचार पत्र।*
2. *दैनिक भास्कर समाचार पत्र।*
3. *टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र।*
4. *विभिन्न ऑनलाईन न्यूज पोर्टल।*
5. *जी न्यूज चैनल।*
6. *आज तक न्यूज चैनल।*

****